महाभारत सभापर्व 69.4-13

स्वयंवरे यास्मि नृपैर्दृष्टा रङ्गे समागतः।

न दृष्टपूर्वा चान्यत्र साहमद्य सभां गता।।4।।

द्रौपदी ने कहा- मैं स्वयंवर के समय सभा में आयी थी औरउस समय रंगभूमि में पधारे हुए राजाओं ने मुझे देखा था। उसके सिवा,अन्य अवसरों पर कहीं भी आज से पहले किसी ने मुझे नहीं देखा। वही मैंआज सभा में बलपूर्वक लायी गयी हूँ।

यां न वायुर्न चादित्यो दृष्टवन्तौ पुरा गृहे।

साहमद्य सभामध्ये दृश्यास्मि जनसंसदि।। 5 ।।

पहले राजभवन में रहते हुए, जिसे वायु तथा सूर्य भी नहीं देख पाते थे, वही मैं आज इस सभा के भीतर महान् जनसमुदाय में आकर सबके नेत्रो की लक्ष्य बन गयी हूँ।

यां न मृष्यन्ति वातेन स्पृश्यमानां गृहे पुरा।

स्पृश्यमानां सहन्तेऽद्य पाण्डावास्तां दुरात्मना।। 6 ।।

पहले अपने महल में रहते समय जिसका वायु द्वारा स्पर्श भी पाण्डवों को सहन नहीं होता था, उसी मुझ द्रौपदी का यह दुरात्मा दु शासन भरी सभा में स्पर्श कर रहा है, तो भी आज ये पाण्डु कुमार सह रहे हैं।।

मृष्यन्ति कुरवश्चेमे मन्ये कालस्य पर्ययम्।

स्नुषां दुहितरं चैव क्लिश्यमानामनर्हतीम्।।7।।

मैं कुरुकुल को पुत्रवधू एवं पुत्रीतुल्य हूँ। सताये जाने के योग्य नहीं हूँ, फिर भी मुझे यह दारुण क्लेश दिया जा रहा है और ये समस्त कुरुवंशी इसे सहन करते हैं। मैं समझती हूँ, बड़ा विपरीत समय आ गया है।

किं न्वतः कृपणं भूयो यदहं स्त्री सती शुभा।

सभामध्यं विगाहेऽद्य क्व नु धर्मो महीक्षिताम्।।8।।

इससे बड़कर दयनीय दशा और क्या हो सकती है कि मुझ जैसी शुभकर्मपरायणा सती-साध्वी सी भरी सभा में विवश करके लायी गयी है।आज राजाओं का धर्म कहाँ चला गया।

धर्म्यां स्त्रियं सभां पूर्वे न नयन्तीति नः श्रुतम्।

स नष्टः कौरवेयेषु पूर्वो धर्मः सनातनः।।9।।

मैने सुना है, पहले लोग धर्मपरायण स्त्री को कभी सभा में नहीं लाते थे, किन्तु इन कौरवों के समाज में वह प्राचीन सनातन धर्म नष्ट हो गया है।

कथं हि भार्या पाण्डूनां पार्षतस्य स्वसा सती।

वासुदेवस्य च सखी पार्थिवानां सभामियाम्।।10।।

अन्यथा मैं पाण्डवों की पत्नी, धृष्टद्युम्न की सुशीला बहन और भगवान् श्री कृष्ण की सखी होकर राजाओं की इस सभा में कैसे लायी जा सकती थी।

तामिमां धर्मराजस्य भार्यां सदृशवर्णजाम्।

ब्रूत दासीमदासी वा तत् करिष्यामि कौरवाः।।11।।

कौरवो! मैं धर्मराज युधिष्ठिर की धर्मपत्नी तथा उनके समान वर्ण की कन्या हूँ। आप लोग बतावें, मैं दासी हूँ या अदासी? आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूँगी।

अयं मां सुदृढं क्षुद्रः कौरवाणां यशोहरः।

क्लिश्नाति नाहं तत् सोढुं चिरं शक्ष्यामि कौरवाः।।12।।

कुरुवंशी क्षत्रियों! यह कुरुकुल की कीर्ति में कलङ्क लगाने वाला नीच दुःशासन मुझे बहुत कष्ट दे रहा है। मैं इस क्लेश को देर तक नहीं सह सकूँगी।

जितां वाप्यजितां वापि मन्यध्वं मां यथा नृपाः।

तथा प्रत्युक्तमिच्छामि तत् करिष्यामि कौरवाः।।13।।

कुरुवंशियो! आप क्या मानते हैं? मैं जीती गयी हूँ या नहीं मैं आपके मुँह से इसका ठीक-ठीक उत्तर सुनना चाहती हूँ। फिर उसी के अनुसार कार्य करूँगी।

Lecture by- Dr. Ritu Mishra

3rd SEM.

Department of sanskrit

Shivaji College.